श्रीगुरु की सिखावनियों की गहराई

मेरे जीवन को आलोकित करने वाली मशाल

जय सायबर्ट द्वारा लिखित

शीत-ऋतु के दौरान कैटस्किल पर्वत-शृंखला पर होने वाला हिमपात बेहद सुहावना होता है। प्रत्येक हिमकण अनूठा होता है। वायुमण्डल में होता हिमकणों का, बर्फ़ का नृत्य मन्त्रमुग्ध कर देने वाला होता है। जिस मनोहरता से बर्फ़ धरती को आच्छादित कर देती है और अपने द्वारा ढकी गई हर वस्तु का आकार ले लेती है, वह बड़ा मोहक होता है। निःसन्देह, सर्दियों का मौसम ध्यान एवं आध्यात्मिक रिट्रीट के लिए अत्यन्त अनुकूल समय होता है।

बर्फ़ से जुड़ा सबकुछ कितना भी जादुई हो, फिर भी ऐसे जिन स्थानों में लोग रहते और घूमते-फिरते हैं, वहाँ सड़कों पर गिरी बर्फ़ को हटाने की आवश्यकता *होती ही* है, रास्तों पर से बर्फ़ को बेलचों से हटाने की आवश्यकता *होती ही* है, खिड़की-दरवाज़ों पर जमी बर्फ़ हटाकर उन्हें साफ़ करने की आवश्यकता *होती ही* है। इसलिए, शीतकाल के दौरान श्री मुक्तानन्द आश्रम में बर्फ़ को हटाना एक प्रमुख सेवा-कार्य होता है।

मैं एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन में एक स्टाफ़-सदस्य हूँ, और मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मेरी सेवा में अनेक तरह के कार्य शामिल हैं। [इसके विपरीत, मेरे अधिकांश सहयोगियों को अपने निर्धारित सेवा-क्षेत्रों में बहुत ही विशिष्ट कार्य करने होते हैं।] कभी मुझे झील के पास जाकर वहाँ की देखरेख करने का अवसर मिलता है। कभी मैं गलियारों की साफ़-सफ़ाई में लग जाता हूँ तो कभी पेड़ों की छँटाई करने वालों को दिशानिर्देश देता हूँ। कभी मुझे सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा होने वाले सिद्धयोग सत्संग में वार्ताएँ देने का सुअवसर मिलता है। कभी मैं युवाओं के साथ मीटिंग आयोजित करके उन्हें समझाता हूँ कि आश्रम में सेवा करने का क्या अर्थ है। और कभी मुझे वरिष्ठ स्टाफ़-सदस्यों से मिलने और विभिन्न सेवाओं व कार्यों के इतिहास के बारे में जानने का अवसर मिलता है, ताकि मैं और अच्छी तरह जान सकूँ कि सेवा से सम्बन्धित चीज़ों को आगे कैसे बढ़ाना है।

कभी-कभी मैं ठीक से काम नहीं कर रहे कम्प्यूटरों को ठीक करने जाता हूँ तो कभी मुझे टपकते या रिसते हुए पाइप को ठीक करना होता है। कभी मुझे स्वामी अखण्डानन्द के साथ ध्यान-कार्यशालाओं में भाग लेने का सुअवसर मिलता है तो कभी मुझे मन्दिर में आरती करने की सेवा मिलती है। और

कभी-कभी मुझे आश्रम में रहने वाले चार वर्षीय रोहित के साथ रहकर उसकी देखभाल करने का अवसर मिलता है जो अपने माता-पिता के साथ यहाँ रहता है और उसके माता-पिता अपने-अपने निर्दिष्ट विभागों में सेवा अर्पित करते हैं।

इससे आपको इस बात की झलक मिल जाएगी कि श्री मुक्तानन्द आश्रम में सेवा के अद्‌भुत जगत में मेरा दिन कैसा होता है। मैंने सुना है कि पिछले वर्षों में, श्रीगुरुमाई ने सिद्धयोग आश्रमों के प्रबन्धकों एवं विभाग-प्रमुखों से यह सुनिश्चित करने को कहा है कि युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में सेवा अर्पित करने के अवसर प्रदान किए जाएँ। इस प्रकार वे विभिन्न कौशल सीखते हैं, अपनी प्रतिभा और क्षमताओं को निखारते हैं। इससे उन्हें सिद्धयोग मिशन व इसमें जो भी समाविष्ट है, उसका एक व्यापक चित्र देखने को मिलता है। इतना ही नहीं, भविष्य में जब वे एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन में सेवा अर्पित कर अपने घर लौटते हैं तो किसी भी उद्यम में सफल होने के लिए पूरी तरह सुसज्जित होते हैं।

अब, लौटते हैं सर्दियों के मौसम के विषय पर : वर्ष २०२२ में, फ़रवरी माह के आरम्भ की एक शाम, मुझे श्रीगुरुमाई का एक सन्देश प्राप्त हुआ कि अनुग्रह बिल्डिंग के सामने, भगवान शिव नटराज की मूर्ति के आगे बने अग्निकुण्ड में भारी मात्रा में बर्फ़ जमा हो गई है। यह बर्फ़ देखने में अच्छी नहीं लग रही थी और इसे अपने आप पिघलने में कितना समय लगेगा यह बताना मुश्किल था, विशेषकर इसलिए कि सर्दियों का मौसम उस समय अपने चरम पर था। बर्फ़ को जल्द-से-जल्द पिघलाने के लिए कुछ करना ज़रूरी था। इसी कारण गुरुमाई जी ने मुझसे कहा कि मैं अगले दिन जाकर अग्निकुण्ड में आग जलाऊँ।

इसलिए, अगले दिन सुबह-सुबह, सबसे पहले मैं भगवान शिव नटराज की मूर्ति के पास जाकर आग जलाने में जुट गया। जब मैंने देखा कि बर्फ़ की परत काफ़ी ठोस, मोटी है तो मुझे स्पष्ट रूप से मालूम हो गया कि इसे पिघलाने के लिए काफ़ी आग जलानी होगी। मैं अग्नि प्रज्वलित करने लगा और फिर अगले एक घण्टे तक, उसमें एक के बाद एक लकड़ी के लट्ठे डालता रहा। आग की लपटें और भी बड़ी व अधिकाधिक दाहक, ऊँची व प्रचण्ड होती जा रही थीं तथा अग्निकुण्ड के किनारों से क़रीब तीन-चार फ़ीट ऊपर उठ रही थीं। इस दृश्य का हिस्सा बनना, इसे देखना बहुत ही रोमांचकारी था। बादलों से आच्छादित उस सर्द सुबह के समय जब हर चीज़ निद्रिस्त-सी थी और भूमि बिलकुल शान्त, सफ़ेद, स्लेटी अथवा भूरे रंग की दिख रही थी, आग की ये लपटें चमकीले केसरिया रंग की दिख रही थीं; और प्रबल वेग से ऊपर उठ रही उन लपटों से चटचटाने की तेज़ ध्वनि निकल रही थी।

जब भी मैं किसी सेवा-कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर लेता हूँ, मुझे अपने मन में एक विशेष शान्ति महसूस होती है, अन्तर में एक कल्याणकारी सत्ता की उपस्थिति अनुभव होती है। बर्फ़ को पिघलते देख मुझे ठीक वैसा ही अनुभव हो रहा था। श्रीगुरुमाई द्वारा बताए गए किसी भी कार्य को पूरा कर लेने पर जो भावना मेरे मन में उत्पन्न होती है, उसकी तुलना किसी भी अन्य चीज़ से नहीं की जा सकती। श्रीगुरुमाई के निर्देश को पूरा करने से मुझे वह सुअवसर भी मिला कि मैं इस प्रकार बर्फ़ और आग से घिरे भगवान शिव नटराज को सम्मानित होते देख सकूँ। भगवान शिव को ये दोनों ही प्रिय हैं।

जब मैं आग जला रहा था, मेरी तीन अलग-अलग स्टाफ़ सदस्यों से अलग-अलग समय पर बात हुई। ये सभी भगवान शिव नटराज की मूर्ति के पास से होते हुए अपने-अपने कार्यालयों की ओर जा रहे थे। उस अद्‌भुत अग्नि के पास पल भर के लिए ठहरकर, उनमें से हर एक ने मुझसे पूछा, "क्या आज कोई पर्व है?" उन सभी के प्रश्नों के उत्तर में मैंने बस इतना ही कहा, "नहीं।"

उसी सुबह बाद में, अनुग्रह की लॉबी में श्रीगुरुमाई के दर्शन कर मुझे बेहद ख़ुशी हुई। मैंने तय किया कि मैं गुरुमाई जी को बताऊँगा कि मैंने आज सुबह भगवान शिव नटराज के समक्ष अग्नि प्रज्वलित की और यह भी कि मुझे काफ़ी अग्नि जलानी पड़ी ताकि पूरी बर्फ़ पिघल जाए।

श्रीगुरुमाई मुस्कराईं और उन्होंने कहा, "यह करने के लिए शुक्रिया, जय। सामान्यतः शीत-ऋतु के दौरान भी शिव नटराज के सामने अग्नि प्रज्वलित रहती है, विशेषकर महाशिवरात्रि के समय। पर ऐसा लग रहा है कि आजकल कोई भी अग्निकुण्ड की देखरेख नहीं कर रहा है।"

चूँकि, गुरुमाई जी मेरी बात में इतनी दिलचस्पी ले रही थीं और उन्होंने मुझे अग्निकुण्ड के महत्त्व के बारे में भी समझाया, अतः मैंने सोचा कि मैं गुरुमाई जी को उन तीन स्टाफ़ सदस्यों के बारे में बताऊँ जिन्होंने मुझसे यह पूछा था कि क्या उस दिन कोई पर्व है। मुझे ठीक से तो नहीं मालूम कि मैंने उन्हें यह क्यों बताया; बस उस क्षण मेरे मन में यह बात आई तो मैंने बता दिया।

जब मैं गुरुमाई जी को यह बता रहा था तब वे बहुत उत्सुकता से सुन रही थीं। उन्होंने तुरन्त पूछा, "तुमने कैसे उसका प्रत्युत्तर दिया?"

गुरुमाई जी का प्रश्न सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि उससे पहले मैंने अपने उत्तर के महत्त्व पर ग़ौर ही नहीं किया था। इसलिए मैंने गुरुमाई जी को सहजता से बस यही बताया, "मैंने उनसे कहा, नहीं।"

गुरुमाई जी को मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने पूछा, "तुमने उनसे कहा 'नहीं'? बस इतना ही? तुमने उनसे 'नहीं' कहा?"

मैंने कहा, "जी हाँ, मैंने बस इतना ही कहा। और कुछ नहीं।"

गुरुमाई जी ने मुझसे कहा, "ठीक, जय, तो आज तुम कुछ अमूल्य सीखने वाले हो।"

जब गुरुमाई जी ने ऐसा कहा तो मेरे कान खड़े हो गए। गुरुमाई जी मुझसे जो कहने वाली थीं, उसे ग्रहण करने के लिए मैं बहुत उत्सुक था।

गुरुमाई जी ने कहा, "देखो जय, तुम इसे थोड़ा अलग तरीक़े से कह सकते थे। जब लोगों ने तुमसे पूछा कि क्या आज कोई पर्व है तो केवल 'नहीं' कहने के बजाय तुम उत्साह के साथ कह सकते थे, 'हाँ! आज एक पर्व का दिन है! सिद्धयोग पथ पर *हर* दिन एक पर्व होता है। हर दिन भगवान का दिन होता है। हर दिन भगवान की पूजा करने का दिन होता है!'"

गुरुमाई जी ने मुझे बताया कि यह अग्निकुण्ड सर्वप्रथम सन् १९९३ में भगवान शिव नटराज के समक्ष बनाया गया था और इसके बाद अनेक वर्षों तक, हर रोज़ भगवान शिव के समक्ष पावन अग्नि को प्रज्वलित किया जाता था। और अब, भले ही हर रोज़ भौतिक रूप से अग्नि प्रज्वलित न की जाती हो, फिर भी वह पावनता, पूजा का वह संकल्प सदैव बना रहना चाहिए। इतना ही नहीं, आश्रम के समक्ष सुशोभित भगवान शिव नटराज की यह मूर्ति कृपा की वर्षा करती है। इसी कारण, यह आवश्यक है कि आश्रम में सेवा करने वाले सभी लोग इस बात के प्रति जागरूक रहें कि भगवान की शक्ति इस स्थान पर जीवन्त है।

गुरुमाई जी ने समझाते हुए आगे मुझसे कहा, "जय, अगर तुम प्रत्युत्तर में यह कहो, 'हर दिन भगवान का दिन होता है,' तो जो वर्षों से श्री मुक्तानन्द आश्रम में सेवा कर रहे हैं, उन सभी लोगों के लिए वह एक यादगार बात हो जाएगी। ऐसा हो जाता है कि कभी-कभी, इस आश्रम में भी, लोग प्रतिदिन होने वाली पूजा का उद्देश्य भूल जाते हैं, चाहे वह दीपक जलाना हो या एक मोमबत्ती जलाना हो या शिव नटराज के सामने अग्नि प्रज्वलित करना हो। अगर तुम उनके सवालों का जवाब उत्साह के साथ देते हो, और जो सचाई है उसे उनके साथ साझा करते हो तो उन सब लोगों के लिए वह एक याद रखने वाली बात बन जाएगी जो यह सोचते हैं कि प्रज्वलित अग्नि का केवल यही अर्थ हो सकता है कि उस दिन कोई 'विशेष अवसर' या 'विशेष पर्व' है।"

जब मैं गुरुमाई जी को सुन रहा था, मैं खुद को अत्यन्त सौभाग्यशाली महसूस कर रहा था। मैं समझ गया कि मुझे श्रीगुरुमाई की सिखावनियाँ प्राप्त हुई हैं और मैंने बेहद प्रेम से उन्हें अंगीकार किया।

मुझे इस बात का भी एहसास हुआ कि गुरुमाई जी ने मुझसे जो करने के लिए कहा था, उसे करने से मैं पूजा की प्राचीन परम्परा में सम्मिलित हो रहा था—वह परम्परा जिसमें एक देवता की शक्ति का सम्मान करने और उनके आशीर्वादों का आवाहन करने हेतु, उनके समक्ष ज्योत प्रज्वलित की जाती है। मुझे स्मरण हो आया कि गुरुमाई जी ने अनेक अवसरों पर इस अग्निकुण्ड में आहुतियाँ अर्पित की हैं। वस्तुतः, गुरुमाई जी द्वारा अग्नि में दी गई आहुतियों के बारे में मेरा एक पसन्दीदा वृत्तान्त सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर है, जब उन्होंने वर्ष २०१५ में अपने जन्मदिन-महोत्सव पर भगवान शिव नटराज के समक्ष स्थित अग्निकुण्ड में आहुतियाँ अर्पित की थीं।

मुझे एक और महत्त्वपूर्ण अन्तर-दृष्टि भी प्राप्त हुई : उस दिन सुबह भगवान शिव नटराज के समक्ष और गुरुमाई जी के दर्शन के दौरान जो कुछ उन्मीलित हुआ था, उसने मुझे श्रीगुरु के शब्दों की शक्ति के प्रति अपने बोध को और अधिक विकसित करने में मदद की। श्रीगुरु का प्रत्येक शब्द व्यक्ति को उच्चतर समझ प्रदान करता है और उसे साधना के उद्देश्य की ओर बढ़ने का मार्ग दिखता है, चाहे वह शब्द कभी-कभी मुझे कितना भी सरल-सा क्यों न लगे। मुझसे श्रीगुरुमाई ने इतना ही कहा था, "बर्फ़ को पिघलाने के लिए अग्नि प्रज्वलित करो।" और मुझे अपने पूरे जीवन को आलोकित करने के लिए एक मशाल मिल गई।

***

फ़रवरी में उस सुबह, अग्नि प्रज्वलित कर बर्फ़ को पिघलाने का एक सौभाग्यपूर्ण लाभ जो हुआ है, वह यह कि भगवान शिव नटराज की पुनः नियमित रूप से पूजा होने लगी है। श्रीगुरुमाई के कहने पर, आगामी वसन्त के आरम्भ से एक अन्य सेवाकर्ता हर सुबह भगवान शिव नटराज के समक्ष अग्नि प्रज्वलित करता रहा है।

गुरुमाई जी से मुझे जो सिखावनी प्राप्त हुई, उससे मैंने अन्य कई लाभों को उजागर होते हुए भी देखा है। इसका एक उदाहरण यह है :

इसी वर्ष, एक दिन मैंने श्री मुक्तानन्द आश्रम की एक अन्य वरिष्ठ स्टाफ़-सदस्या को यह दिव्य कहानी सुनाई; मैंने देखा है कि ये सदस्या सिद्धयोग की सिखावनियों में लीन रहती हैं और सेवा के प्रति उनकी वचनबद्धता के लिए मेरे मन में हमेशा ही सराहना का भाव रहा है। अग्निकुण्ड के पास जो घटित हुआ

और गुरुमाई जी द्वारा मुझे प्रदान की गई सिखावनियों के बारे में जब मैंने उन्हें बताया तो उनकी आँखें चमक उठीं। उन्होंने मुझे एक कहानी सुनाई जो गुरुमाई जी ने उन्हें वर्षों पहले सुनाई थी। यह कहानी अमरीका के मूलनिवासियों की परम्परा से है और "Song of Life" ['सान्ग ऑफ़ लाइफ़' अर्थात् 'जीवन का गीत'] कहलाती है।

इस कहानी का मूल भाव यह है कि हर व्यक्ति की आत्मा के जीवन का एक गीत होता है, एक विशेष स्पन्दन होता है जो उस व्यक्ति के विशिष्ट गुण या चरित्र को धारण करता है व उसे व्यक्त करता है। इस परम्परा में, बच्चे के जन्म से पहले उस समुदाय के लोग उस बच्चे के जीवन के गीत का पता लगाने हेतु प्रार्थना व ध्यान करने के लिए एकत्रित होते हैं। जब वे उस बच्चे की आत्मा के साथ जुड़ते हैं, वे उस गीत को खोज लेते हैं और फिर वे उसी गीत को आने वाले बच्चे की माँ को गाकर सुनाते हैं। बच्चे के जीवन में महत्त्वपूर्ण अवसरों पर समुदाय के लोग उसके आस-पास इकट्ठा होते हैं और बच्चे को उसके अपने सच्चे व अनोखे स्वरूप का स्मरण कराने हेतु उसे उसके जीवन का गीत गाकर सुनाते हैं।

जब उन स्टाफ़-सदस्या ने मुझे यह कहानी सुनाई, मैं समझ गया कि सिद्धयोग पथ पर एक-दूसरे को अपने अनुभव, अन्तर-दृष्टियाँ या समझ बताना कितना शक्तिपूर्ण है। मैंने गुरुमाई जी के निर्देश का पालन करने का अपना अनुभव बताया, इसलिए मुझे प्रज्ञान का एक और उपहार प्राप्त हुआ।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।